आलोचना

डॉ. कार्तिक चौधरी

जन्म	:	15 अक्टूबर 1983
शिक्षा	:	प्रारम्भिक शिक्षा हाज़िनगर आदर्श हिंदी हाई स्कूल से। ऋषि बंकिमचंद्र कॉलेज से स्नातक तथा कल्याणी विश्वविद्यालय से एम. ए.। वर्द्धमान विश्वविद्यालय से एम. फिल. और यूजीसी द्वारा जूनियर रिसर्च फेलोशिप के तहत पीएच. डी.।
प्रकाशन	:	दलित चेतना के संदर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ (आलोचना), दलित साहित्य की दशा-दिशा : समकालीन परिप्रेक्ष्य में (संपादन), अस्मितामूलक विमर्श(आलोचना), बंगाल में हिंदी दलित और आदिवासी कविता(संपादन), डॉ. अम्बेडकर और आधुनिक भारत(संपादन) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और संपादित पुस्तकों में लेखों का प्रकाशन।
सम्मान	:	डॉ. अम्बेडकर सृजन सम्मान(2021)
संप्रति	:	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, महाराजा श्रीशचंद्र कॉलेज, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
संपर्क सूत्र	:	अनिमा अपार्टमेंट, अगरपाड़ा, इतियास रोड, कोलकाता-7000058
मोबाइल	:	8240796679, ईमेल : cartik.chowdhary@gmail.com

डॉ. शशि कुमार शर्मा

जन्म	:	07 दिसंबर 1984 (बिहार, जिला-सिवान, गाँव-मधुकुंदपुर)
शिक्षा	:	एम. ए., पीएच. डी. (हिंदी, वर्द्धमान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल)
प्रकाशित पुस्तकें	:	शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का यथार्थ, समकालीन साहित्य : स्त्री, समाज और संस्कृति, रेणु का साहित्य : समय और संवेदना।
प्रकाशन	:	• विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख एवं कविताएं प्रकाशित। • सम्पादित पुस्तकों में आलेख प्रकाशित। • बंगला से हिंदी में लिप्यंतरण तथा भोजपुरी कविताएं भी प्रकाशित।
संप्रति	:	सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग), वर्द्धमान विश्वविद्यालय, राजबाटी, वर्द्धमान, पश्चिम बंगाल-713104
संपर्क सूत्र	:	मोबाइल नंबर-8509580494 ई-मेल : shashibu07@gmail.com

अधिकरण प्रकाशन
नयी रचना नये विचार
अक्षर अक्षर आँखदार
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
ISBN 978-93-91570-04-0

प्रेमचंद का साहित्य : अनुभव और यथार्थ

संपादक ● डॉ. कार्तिक चौधरी ● डॉ. शशि कुमार शर्मा

प्रेमचंद का साहित्य

अनुभव और यथार्थ

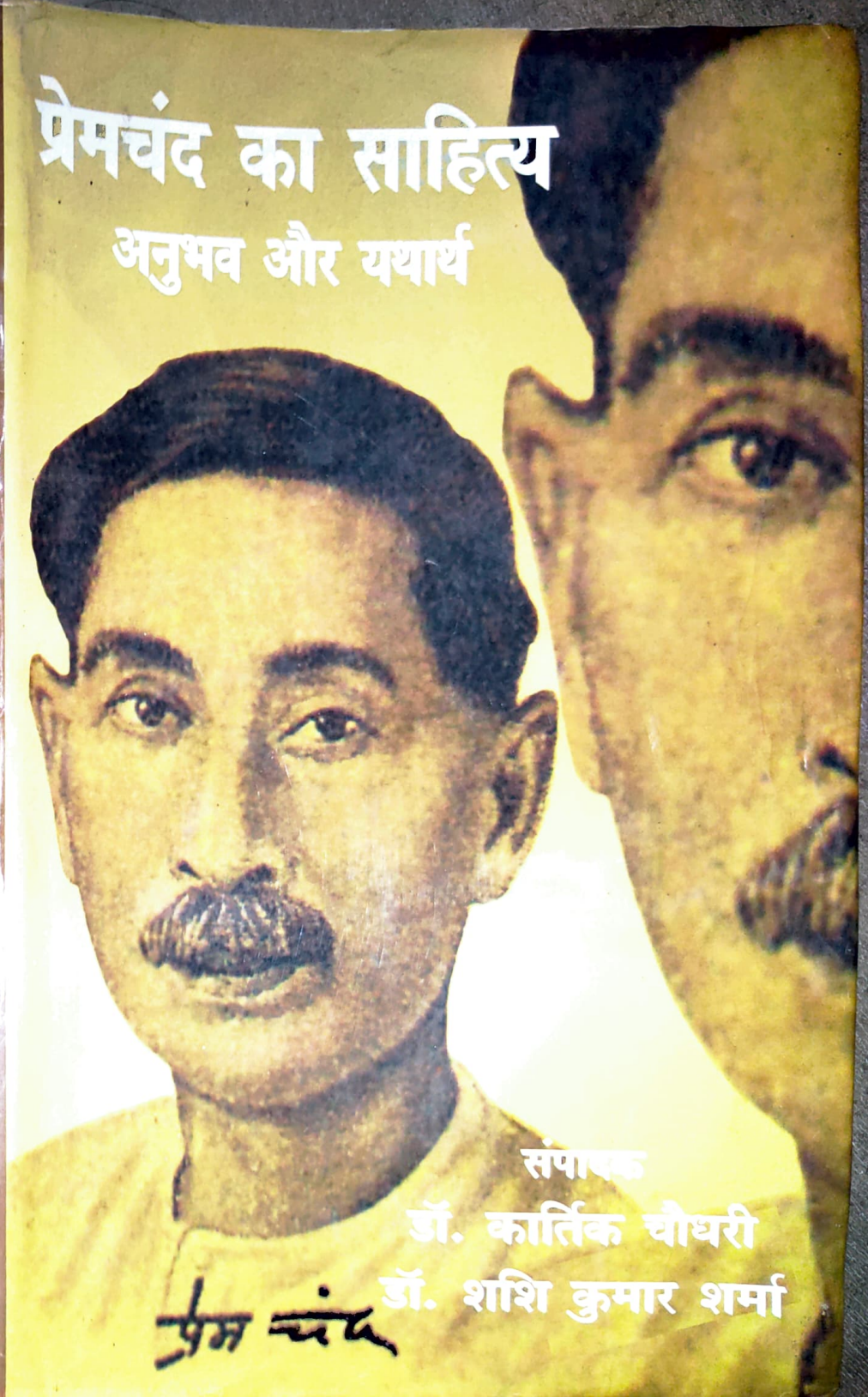

संपादक

डॉ. कार्तिक चौधरी

डॉ. शशि कुमार शर्मा

प्रेमचन्द के नाटकों में स्त्री जीवन

- सोनी साव

प्रेमचन्द साहित्य जगत का ऐसा नाम है जो अपने रचनाओं से समाज को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। उनका साहित्य संसार जितना व्यापक रहा है उतना विरले ही साहित्यकारों का होता है। प्रेमचन्द तत्कालीन समस्या को अपने लेखन का विषय बनाकर समाज के समक्ष एक जागृति प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक विसंगतियों का चित्रण इनके रचनाओं की विषय वस्तु रही है। ऐसा कोई वर्ग शायद ही होगा जो प्रेमचन्द की दृष्टि से छिपा रह सका हो। ऐसे व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार का जन्म 31 जुलाई 1880 ई. में 'लमही' नामक गाँव में हुआ था। आर्थिक अभाव ने प्रेमचन्द को जीवन के विषम परिस्थितियों से संघर्ष करना सिखाया। यह संघर्ष ही है जो उनके रचनाओं को जीवन्त दृष्टि प्रदान करता है। उन्हें साहित्यिक जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। प्रारम्भ में 'नबावराय' के नाम से लेखन कार्य करते थे, किन्तु 'सोजेवतन' के जब्त हो जाने के बाद वे 'दयानारायन निगम' के सुझाव से 'प्रेमचन्द' नाम से लिखना प्रारम्भ करते हैं। साहित्य की विविध गद्य विधाओं के माध्यम से 'प्रेमचन्द' साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। दलित, किसान, वृद्ध तथा स्त्री जीवन का संघर्ष उनके रचनाओं के केन्द्र में रहा है। स्त्री जीवन के अनेक पक्षों को 'प्रेमचन्द' के कहानी तथा उपन्यास ही नहीं बल्कि उनके नाटकों में भी देखा जा सकता है। प्रेमचन्द तीन नाटकों की रचना की है - 'संग्राम'(1923), 'कर्बला' (1924), 'प्रेम की वेदी' (1933)। इनके नाटकों में जिन सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है वह समस्याएँ वर्तमान समय में भी वैसी ही है। 'रामविलास शर्मा' लिखते हैं - "वह एक युग-निर्माता साहित्यकार थे, केवल साहित्य में युग को नाम देने वाले नहीं बल्कि अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नई गति और नई दिशा